सुप्रीम कोर्ट ने फिर किया आगाह

सुप्रीम कोर्ट के सामने मौजूदा मामला भी ऐसा ही था। कोर्ट ने इस स्थिति पर अफसोस जरूर जताया, लेकिन फिर भी अपनी तरफ से यह स्पष्ट कर देना जरूरी समझा कि अगर जांच अधिकारी समझता है कि आरोपी सहयोग कर रहा है।

अंजु सिंह।।

सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर आगाह किया है कि गिरफ्तारी को एक रूटीन कार्रवाई का रूप नहीं देना चाहिए। इस बात का ख्याल रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की गिरफ्तारी से उसकी प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान को जबर्दस्त चोट पहुंचती है। कोर्ट ने कहा कि पुलिस किसी को गिरफ्तार कर सकती है, उसके पास इसका कानूनी अधिकार है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उसे हर आरोपी को गिरफ्तार कर ही लेना है। कानून के तहत एक अधिकार होना और उस अधिकार का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करना, दोनों दो बातें हैं और इनके बीच का अंतर स्पष्ट होना चाहिए। हालांकि इस बारे में सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइंस काफी पहले से मौजूद हैं। लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा का भी तकाजा है कि गिरफ्तारी को नियम न बना दिया जाए, उसे अपवाद के ही रूप में रहने दिया जाए। इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट के पास ऐसे मामले बड़ी संख्या में आते रहते हैं, जिनमें आरोपी के जांच में पूरा सहयोग देने पर भी आरोपपत्र दायर करते समय उसे गिरफ्तार किया जाता है क्योंकि निचली अदालतों का आग्रह होता है कि अगर आरोपी को गिरफ्तार कर उनके सामने पेश नहीं किया जाएगा तो आरोपपत्र रेकॉर्ड पर नहीं लिया जाएगा। हालांकि हाईकोर्ट के भी ऐसे कई फैसले हैं, जिनमें स्पष्ट किया गया है कि इस आधार पर आरोपपत्र स्वीकार करने से इनकार नहीं किया जा सकता कि आरोपी को गिरफ्तार नहीं किया गया है। सुप्रीम कोर्ट के सामने मौजूदा मामला भी ऐसा ही था। कोर्ट ने इस स्थिति पर अफसोस जरूर जताया, लेकिन फिर भी अपनी तरफ से यह स्पष्ट कर देना जरूरी समझा कि अगर जांच अधिकारी समझता है कि आरोपी सहयोग कर रहा है और उसके फरार होने की कोई आशंका नहीं है तो उसे आरोपी को गिरफ्तार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने पहले से स्थापित इस धारणा को दोहराते हुए और मजबूती दे दी कि किसी मामले में गिरफ्तारी की ठोस वजहें होनी चाहिए। या तो अपराध बेहद गंभीर प्रकृति का हो या हिरासत में पूछताछ जरूरी हो जाए या फिर गवाहों को प्रभावित करने या आरोपी के फरार हो जाने की आशंका हो।

जाहिर है, ऐसा कुछ न होने पर किसी आरोपी को गिरफ्तार करने की प्रवृत्ति उचित नहीं कही जा सकती। किसी भी वजह से ऐसा संकेत नहीं जाना चाहिए कि जांच एजेंसियों की दिलचस्पी आरोपी को गिरफ्तार करने और न्याय प्रक्रिया के बहाने अधिक से अधिक समय तक जेल में डालने में है। इससे जांच प्रक्रिया ही अपने आप में एक सजा बन जाती है जिसका सबसे ज्यादा नुकसान इंसाफ को होता है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सुप्रीम कोर्ट का यह सामयिक दिशानिर्देश केवल पुलिस और निचली अदालतों को ही नहीं बल्कि तमाम जांच एजेंसियों को अपने आचरण की समीक्षा करने की प्रेरणा देगा।

समय जरूर बदलेगा

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

बहुत समय पहले की बात है, अचलगढ़ के राजा श्यामसिंह ने राज्य में घोषणा करवा दी कि उनके राज्य में वही योगी रह सकता है जो उसके सवालों का सही जवाब दे दे, अन्यथा उसे संन्यास छोड़कर विवाह करना पड़ेगा। राजा श्यामसिंह के सवाल थे, 'योगी और गृहस्थ को कैसा होना चाहिए? तथा योगी बनना ठीक है या गृहस्थ?' राज्य में अनेक योगी आए, पर संतोषजनक उत्तर न देने पर उन्हें गृहस्थ बनना पड़ा। एक दिन प्रातः काल ही एक योगी राजमहल के द्वार पर पहुंचा। द्वारपाल उसे राजा के पास ले गया। राजा ने उससे भी अपने सवाल दुहराए। योगी ने कहा, "हे राजन! इन सवालों का जवाब मैं आपको एक महीने बाद दूंगा।" राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। अवधि पूरी होने पर योगी ने राजा से कहा, "राजन! आप आपको मेरे साथ चलना होगा।"

संपादकीय

बदलनी होगी व्यवस्था

हमें अपनी ऊर्जा की खपत कम करनी होगी, जिसके लिए हमें ऊर्जा की कीमतों में वृद्धि करनी पड़ेगी। दूसरे, बिजली के दाम को कच्चे माल के दाम के अनुसार बदलते रहना होगा। जिस प्रकार पेट्रोल और डीजल के दाम प्रतिदिन उतरते–चढ़ते हैं, उसी तरह बिजली के दाम में भी दैनिक नहीं, तो मासिक परिवर्तन की व्यवस्था करनी होगी। वर्तमान में बिजली का मूल्य 6 से 8 रुपया प्रति यूनिट है, जिसे लंबे समय के लिए निर्धारित किया गया है। कच्चे माल के वैश्विक दाम में वृद्धि के साथ–साथ इसमें वृद्धि नहीं की जा सकती है। इसलिए संकट पैदा हुआ है। आगे की सोचें तो ग्लोबल वार्मिंग के कारण इस प्रकार के संकट उत्तरोत्तर आते रहेंगे। हमारी विशेष समस्या यह भी है कि हम अपनी खपत का 10 प्रतिशत कोयले और 85 प्रतिशत ईंधन तेल का आयात करते हैं। हम वैश्विक बाजार पर इस कच्चे माल के लिए निर्भर हैं। इस कच्चे माल के दाम बढ़ते–घटते रहते हैं लेकिन देश में बिजली का दाम विद्युत् नियामक आयोग लंबे समय के लिए तय करता है। इसलिए कच्चे माल का दाम चढ़ता–उतरता रहता है, जबकि बिजली का दाम स्थिर रहता है। जैसे वर्तमान में कच्चे माल का दाम बढ़ गया है। बिजली के दाम में समानांतर वृद्धि न होने के कारण कुछ बिजली संयंत्रों को उत्पादन बंद करना पड़ा है और संकट पैदा हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण कोयले और तेल के मूल्य में तीव्र उतार–चढ़ाव होते रहेंगे और उसके अनुसार घरेलू व्यवस्था को बदलना होगा, तभी इस प्रकार के संकट का निवारण होगा।

ग्लोबल वार्मिंग ने बिजली के उत्पादन को तीन तरह से प्रभावित किया है। पहला यह कि भारत में कोयले की खदानों में बाढ़ आने से उत्पादन प्रभावित हुआ है।

असर ग्लोबल वार्मिंग का

भरत झुनझुनवाला।।

वर्तमान बिजली संकट का तात्कालिक कारण कोयले की शॉर्टेज है लेकिन यह शॉर्टेज खुद ग्लोबल वार्मिंग की वजह से है। आगे बढ़ने से पहले कुछ कथित कारणों का निवारण जरूरी है। पहला कथित कारण है कि कोविड संकट के बाद अर्थव्यवस्थाएं फिर स्पीड पकड़ रही हैं जिससे बिजली की मांग बढ़ी और संकट पैदा हो गया है। यह मान्य नहीं है क्योंकि अपने देश में जितना कोयले का उत्पादन अप्रैल से सितंबर 2019 में हुआ था, उससे 11 प्रतिशत अधिक उत्पादन अप्रैल से सितंबर 2021 में हुआ है। कोविड के बाद कोयले का घरेलू उत्पादन बढ़ा है इसलिए यह संकट का कारण नहीं है। दूसरा कथित कारण यह बताया जा रहा है कि चीन ने ऑस्ट्रेलिया से कोयले के आयात पर रोक लगा दी है। यह भी मान्य नहीं है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया के कोयले की मांग बढ़ी हुई है।

चीन के कोयला न खरीदने से विश्व बाजार में ऑस्ट्रेलिया के कोयले की सप्लाई में कमी नहीं आई है। तीसरा कथित कारण है कि थर्मल पावर की जगह पर सोलर और विंड पावर के बढ़ते उपयोग के चलते कोयले के उत्पादन से उद्यमियों का ध्यान हट गया है और संकट पैदा हुआ है। यह तर्क भी सटीक नहीं बैठता है। अगर यह कारण होता तो कोयले की मांग कम

होती, कोयले की उपब्धता बढ़ती और उसके दाम गिरते। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। इसलिए तीनों कारण स्वीकार नहीं हैं।

असल में वर्तमान संकट ग्लोबल वार्मिंग के कारण बिजली उत्पादन में कमी के साथ खपत में वृद्धि का संयोग है। ग्लोबल वार्मिंग ने बिजली के उत्पादन को तीन तरह से प्रभावित किया है। पहला यह कि भारत में कोयले की खदानों में बाढ़ आने से उत्पादन प्रभावित हुआ है। चीन और ऑस्ट्रेलिया में भी कोयले की खानों में बाढ़ आने से उत्पादन में गिरावट आई है। इस कारण कोयले का कुल वैश्विक उत्पादन गिरा और कीमतों में इजाफा हुआ है। दूसरा कारण, बीते समय में विश्व के कई हिस्सों में भयंकर तूफान आए, विशेषकर अमेरिका के तेल उत्पादक राज्यों लुईजियाना और टेक्सास में। जिसके कारण वहां तेल का उत्पादन प्रभावित हुआ। तीसरा कारण, बीते समय में चीन में मौसम सूखा रहा है जिसके चलते जल विद्युत का उत्पादन गिरा है। चीन में वायु की गति भी सुस्त रही है जिसके कारण विंड पावर का उत्पादन भी कम हुआ है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण बिजली की खपत में भी वृद्धि हुई है। बीते वर्ष यूरोपीय देशों में ठंड का मौसम लंबा खिंचा, जिसके कारण तेल की खपत अधिक हुई और उन देशों के पास तेल के भंडार बेहद कम बचे। आगामी सर्दी का समय भी लंबा खिंचने का अनुमान है। इसलिए ये देश तेल का अधिक भंडारण करना चाह रहे हैं, फलस्वरूप तेल की मांग बढ़ी हुई है। इसलिए ग्लोबल वार्मिंग से एक ओर बाढ़ के प्रकोप से, सूखा पड़ने और वायु की तीव्रता कम होने से उत्पादन कम हुआ है, जबकि दूसरी तरफ ठंड के लंबे खिंचने से उर्जा की खपत बढ़ी है। इन प्रभावों का संयुक्त परिणाम रहा कि ऊर्जा की पूर्ति कम हुई, जबकी मांग अधिक है और संकट उत्पन्न हुआ है। यही कारण है कि यूरोप में नैचरल गैस के दाम और वैश्विक स्टार पर कच्चे तेल और कोयले के दाम में भारी वृद्धि हुई। कई थर्मल बिजली उत्पादन संयंत्र आयातित कोयले पर आधारित हैं। फलस्वरूप देश में बिजली का उत्पादन गिरा है और संकट पैदा हो गया है। जिस प्रकार मरीज का तापमान 104 डिग्री से 105 डिग्री होने से मरीज की हालत बिगड़ जाती है, उसी प्रकार आयातित कोयले से उत्पादित होने वाली 10 प्रतिशत बिजली पर संकट आने से पूरे देश में संकट पैदा हो गया है।

अष्टयोग-5017

	3		4	1		2
4	28		25		36	
	5			6	7	4
	28	5	35	3	39	
3	2		6		5	
	32	3	42	5	32	
1	5			4		3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5016 का हल

6	3	5	7	4	1	2
1	28	3	40	5	31	7
2	1	7	6	3	5	4
7	34	6	31	2	30	3
3	6	2	4	1	7	5
5	30	4	28	6	35	1
4	5	1	3	7	2	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

वारदात कंपनी की मशीनों में हुई एक गलत

मोहन। दुनिया भर में फेसबुक के बयानों पर अब कोई आसानी से विश्वास नहीं करता, फिर भी एक समाचार एजेंसी ने कंपनी के कर्मचारियों से बात करके खुलासा किया कि यह वारदात कंपनी की मशीनों में हुई एक गलती की वजह से हुई। एनवाई टाइम्स, द गार्जियन और वॉशिंगटन पोस्ट जैसे अखबारों में जिन एक्सपर्ट्स ने अपनी राय दी, उसके मुताबिक यह कंपनी के अंदर की गलती थी। साथ ही यह भी संभावना है कि इसमें कोई अंदर का आदमी शामिल हो सकता है। जिस तरह से अमेरिकी व्हिसलब्लोअर फ्रांसेस हॉगन फेसबुक की हरकतों पर चिंतित हैं, कंपनी में काम करने वाले और लोग भी चिंतित हो सकते हैं। आखिर मामला हमारे बच्चों और लोकतंत्र से जुड़ा हुआ है। दूसरी तरफ कुछ अमेरिकी वेबसाइट ने सनसनीखेज दावा करते हुए बताया कि यह फेसबुक के अंदर की गलती नहीं थी। इन वेबसाइट्स के मुताबिक यह थॉमस नाम के हैकर का कारनामा था। इनका यह भी दावा था कि यह मामला अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई के संज्ञान में है और इस कुख्यात अपराधी थॉमस को पकड़ने की जिम्मेदारी एफबीआई में साइबर क्राइम के अधिकारी जॉन मैकक्लेन को दी गई है।